Moral Education

खण्ड- क

प्र.1 (ख) तीन
प्र.2 (ग) ईश्वर प्रणिधान
प्र.3 (ख) शिक्षक
प्र.4 (क) चार
प्र.5 (क) वेश का
प्र.6 (ख) आठवें
प्र.7 (ख) स्वामी दयानन्द
प्र.8 (क) ईश्वर
प्र.9 (ग) चौदह

प्र.10 (घ) पाँच (1)

खण्ड - ख

प्र.11 संन्यास आश्रम जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इस आश्रम के बिना विद्या और धर्म की वृद्धि नहीं हो सकती। सत्य का उपदेश करना और वेदादी सत्यशास्त्रों का विचार और प्रचार करना ही एक संन्यासी का परम कर्तव्य है। सच्चा संन्यासी वही है जो मन से संन्यासी है। (2)

प्र.12 "जो बीती सो बीती लेकिन बाकि उमर सँभालूँ मैं" पंक्ति का अर्थ है कि भक्त भगवान से प्रार्थना कर रहा है कि भगवान उसे उसके पापकर्मों के लिए क्षमा करदे और ज्ञान देकर उसे सन्मार्ग की ओर प्रेरित करे ताकि भक्त अपनी भूल सुधार सके और जो बीत गया उसे भुलाकर अपना भविष्य उज्ज्वल बना सके। भक्त बीता हुआ कल भुलाकर अपनी बाकी की बची हुई जिंदगी उमर सँभालना चाहता है। (2)

प्र.13 ऋषि, मुनी, साधु, विद्वान और जो लोग पूर्ण आस्तिक हैं अर्थात ईश्वर पर भरोसा करते हैं, पूर्ण श्रद्धा से ईश्वर की भक्ति, उपासना करते हैं और जो लोग विद्वान हैं वे सभी ईश्वर के गुणगान करते हैं। (2)

प्र.14 डॉ महाजन को 4 जनवरी 1954 को मुख्य न्यायधीश बनाया गया। उन्होंने अपने उत्तरदायित्व को निष्ठापूर्वक निभाया। (2)

प्र.5 राष्ट्रीय गीत में भारतमाता को सुंदर जल वाली, सुंदर फल वाली, चंदन से शीतल, हरियाली से हरी-भरी, चाँदनी से प्रसन्न रात वाली, खिले हुए फूलों वाले वृक्षों से शोभा देने वाली, सुंदर हँसने वाली, मधुर बोलने वाली, सुख देने वाली और वरदान देने वाली बताया है। (2)

खण्ड - ग

प्र.6 ऋषि मुनियों के अनुसार विद्यार्थी का जीवन सादा, संयमी, धैर्यपूर्वक और सुव्यवस्थित होना चाहिए। विद्यार्थी को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि यदि एक बार समय बीत गया तो लौट नहीं आएगा। यदि एक बार समय को खेलकूद, मौज-मस्ती, इंगरेमलियों में बरबाद कर दिया तो जीवन में दोबारा तैयारी का अवसर नहीं मिलेगा। और चरित्र निर्माण एवं ज्ञानप्राप्ति का वह समय लौट कर नहीं आएगा। अतः विद्यार्थियों को साधारण, धैर्यपूर्वक और कठिन परिश्रम कर अपने जीवन को उन्नत एवं सफल बनाना चाहिए। कम समय में अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। (3)

प्र.7 स्वराज्य के विषय में स्वामी दयानन्द के ये विचार हैं कि चाहे कोई देश कितना भी अच्छा हो परन्तु स्वदेश के समान अच्छा नहीं हो सकता। विदेशी राज्य में किसी को भी स्वदेश के समान सुख नहीं मिल सकता। व्यक्ति को स्वदेश में रहकर अपने देश का निर्माण करके देश का नाम ऊँचा करना चाहिए और देश से प्रेम करना चाहिए। विदेशी राज्य स्वराज्य की तरह सुखी, समृद्ध और स्वस्थ जीवन नहीं दे सकता। (3)